चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Savera Times	24.08.2025	--	--

Carrot grass is fatal for humans, animals and plants: Dr. Rajbir Garg

Experts warn of dangerous weed during awareness week held from August 16-22

@ The Savera Times Network

Hisar: Carrot Grass Eradication Awareness Week was observed from August 16 to 22, jointly organized by the Department of Agronomy at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar, and the Weed Research Directorate, Jabalpur.

Research Director Dr. Rajbir Garg warned that while nature is home to countless beneficial plants, some, like carrot grass (also known as Chatak Chandni), are becoming increasingly harmful. With the onset of the monsoon, this invasive plant with carrot-like leaves spreads rapidly across vacant and unused lands, posing a severe threat to human, animal, and plant health.

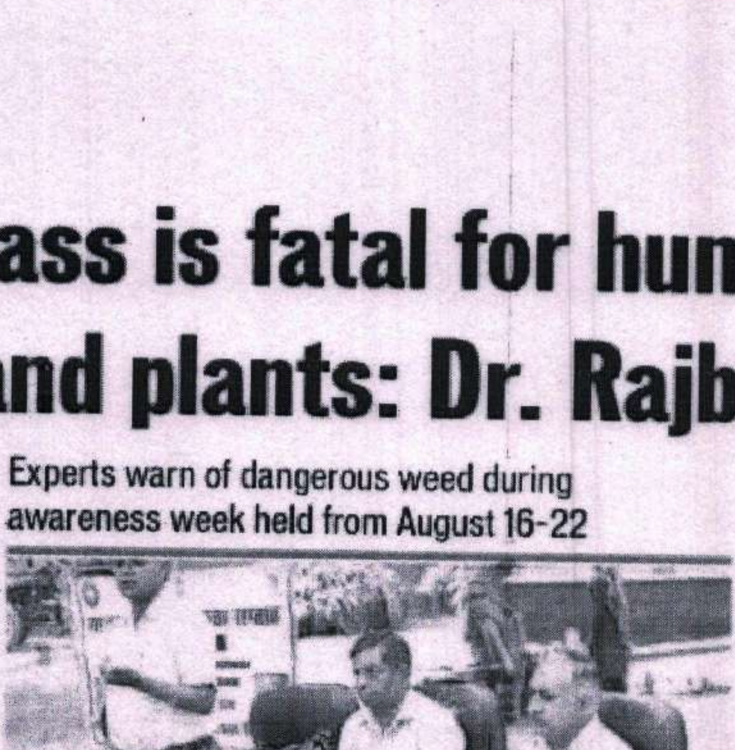

Research director and other scientists giving information about carrot grass

Dr. Anil Kumar Yadav, Head of the Department of Agronomy, explained the plant's origin, rapid spread, and damaging effects. He emphasized that frequent contact with carrot grass can lead to serious health conditions such as dermatitis, eczema, allergies, asthma, and fever. Its presence in farmlands also affects crop growth and reduces agricultural productivity.

Dr. Todarmal Poonia, Chief Investigator of the All India Weed Research Project at the Hisar Center, shared details on chemical measures to control its spread. Meanwhile, Dr. Paras Kamboj highlighted biological pest control as an eco-friendly alternative to managing this weed.

The event saw active participation from university scientists including Dr. S. K. Thakral, Dr. Virendra Hooda, Dr. R. S. Dadarwal, Dr. Kautilya, Dr. Bhagat Singh, Dr. Sushil Kumar, and several others. Faculty members, students, and staff also took part in the awareness campaign, aimed at educating the public and stakeholders about the urgent need to eradicate carrot grass to safeguard health and biodiversity.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	24-8-25	5	6-8

मनुष्यों, पशुओं व वनस्पति के लिए घातक है गाजर घास : डॉ. गर्ग

हिसार, 23 अगस्त (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर द्वारा संयुक्त रूप से 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह मनाया गया। यह जानकारी देते हुए अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रकृति में अत्यंत महत्वपूर्ण वनस्पतियों के अलावा कुछ वनस्पतियां ऐसी भी है जो धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती है।

इसे गाजर घास, या चटक चांदनी आदि के नाम से जाना जाता है। गाजर घास को सभी के लिए गंभीर समस्या बताते हुए उन्होंने कहा कि यह पूरे वर्ष भर खाली स्थान एवं अनुपयोगी भूमि पर उगता और फलता फूलता रहता है। सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार यादव ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता और

गाजर घास संबंधी जानकारी देते अनुसंधान निदेशक व अन्य वैज्ञानिक।

इससे कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लगातार इस घास के सम्पर्क में आने से मनुष्यों में डर्मेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी अनेक गंभीर बीमारियां हो रही हैं। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने गाजर घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में जानकारी दी। डॉ. पारस कम्बोज ने जैविक कीट नियंत्रण द्वारा गाजर घास की रोकथाम पर विस्तार से प्रकाश डाला। सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एस. के. ठकराल, डॉ. वीरेंद्र हुड्डा, डॉ. आर.एस. दादरवाल, डॉ. कौटिल्य, डॉ. भगत सिंह, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. रामधन, डॉ. नीलम, डॉ. रितांबरा, डॉ. सतपाल, डॉ. श्वेता, डॉ. मूली देवी, डॉ. कविता, डॉ. सत्यनारायण सहित अन्य कर्मचारी और विद्यार्थी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	24.8.25	3	5-7

मनुष्यों, पशुओं व वनस्पति के लिए घातक है गाजर घास : डॉ. राजबीर

22 अगस्त तक मनाया गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर द्वारा संयुक्त रूप से 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह मनाया गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया प्रकृति में अत्यंत महत्वपूर्ण वनस्पतियों के अलावा कुछ वनस्पतियां ऐसी भी हैं जो धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही हैं। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती है। इसे गाजर घास, या चटक चांदनी आदि के नाम से जाना जाता है। गाजर घास को सभी के लिए गंभीर समस्या बताते हुए उन्होंने कहा यह पूरे वर्ष भर खाली स्थान एवं अनुपयोगी भूमि पर उगता और फलता फूलता रहता है। सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार यादव ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता और इससे कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले

बारिश में खाली स्थानों पर उगने वाली गाजर घास के बारे में जागरुक करते एचएयू के कृषि वैज्ञानिक

हानिकारक प्रभावों के बारे में बताया कि लगातार इस घास के सम्पर्क में आने से मनुष्यों में डर्मेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी अनेक गंभीर बीमारियां हो रही हैं। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने गाजर घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	24.8.25	5	3-5

मनुष्य व पशुओं के लिए घातक है गाजर घास

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर द्वारा संयुक्त रूप से 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह मनाया गया।

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रकृति में अत्यंत महत्वपूर्ण वनस्पतियों के अलावा कुछ वनस्पतियां ऐसी भी है जो धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती है।

गाजर घास के बारे में जानकारी देते अनुसंधान निदेशक व अन्य विज्ञानी • जागरण

इसे गाजर घास, या चटक चांदनी आदि के नाम से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि यह पूरे वर्ष भर खाली स्थान एवं अनुपयोगी भूमि पर उगता और फलता फूलता रहता है। सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डा. अनिल कुमार यादव ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता और इससे कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लगातार इस घास के सम्पर्क में आने से मनुष्यों में डर्मेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी अनेक गंभीर बीमारियां हो रही हैं। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डा. टोडरमल पूनिया ने गाजर घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में जानकारी दी।

जैविक कीट नियंत्रण के बारे में दी जानकारी : डा. पारस कम्बोज ने जैविक कीट नियंत्रण द्वारा गाजर घास की रोकथाम पर विस्तार से प्रकाश डाला। सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डा. एसके ठकराल, डा. वीरेंद्र हुड्डा, डा. आरएस दादरवाल, डा. कौटिल्य, डा. भगत सिंह, डा. सुशील कुमार, डा. रामधन, डा. नीलम, डा. रितांबरा, डा. सतपाल, डा. श्वेता, डा. मूली देवी, डा. कविता, डा. सत्यनारायण आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	24.08.2025	--	--

एचएयू में मनाया गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह

गाजर घास के संपर्क से मनुष्य में डर्मेआइटिस व एक्जिमा जैसी गंभीर बीमारियां हो सकती है

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर द्वारा संयुक्त रूप से 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह मनाया गया।

अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रकृति में अत्यंत महत्वपूर्ण वनस्पतियों के अलावा कुछ वनस्पतियां ऐसी भी है जो धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती है। इसे गाजर घास, या चटक चांदनी आदि के नाम से जाना जाता है। गाजर घास को सभी के लिए गंभीर समस्या बताते हुए उन्होंने कहा कि यह पूरे वर्ष भर खाली स्थान एवं अनुपयोगी भूमि पर उगता और फलता फूलता रहता है।

सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार यादव ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता और इससे कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लगातार इस घास के सम्पर्क में आने से मनुष्यों में डर्मेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी अनेक गंभीर बीमारियां हो रही हैं।

अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने गाजर घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में जानकारी दी। डॉ. पारस कम्बोज ने जैविक कीट नियंत्रण द्वारा गाजर घास की रोकथाम पर विस्तार से प्रकाश डाला। सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ. एस. के. ठकराल, डॉ. वीरेंद्र हुड्डा, डॉ. आर.एस. दादरवाल, डॉ. कौटिल्य, डॉ. भगत सिंह, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. रामधन, डॉ. नीलम, डॉ. रितांबरा, डॉ. सतपाल, डॉ. श्वेता, डॉ. मूली देवी, डॉ. कविता, डॉ. सत्यनारायण सहित अन्य कर्मचारी और विद्यार्थी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग न्यूज	24.08.2025	--	--

मनुष्यों, पशुओं व वनस्पति के लिए घातक है गाजर घास: डॉ. राजबीर

महेंद्र गोयल

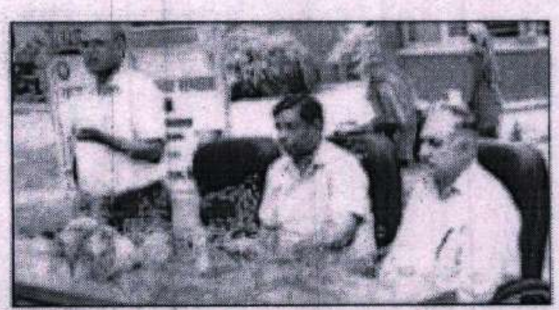

हिसार, (जगमार्ग न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग एवं खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर द्वारा संयुक्त रूप से 16 से 22 अगस्त तक गाजर घास उन्मूलन जागरूकता सप्ताह मनाया गया। यह जानकारी देते हुए अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि प्रकृति में अत्यंत महत्वपूर्ण वनस्पतियों के अलावा कुछ वनस्पतियां ऐसी भी है जो धीरे-धीरे एक अभिशाप का रूप लेती जा रही है। बरसात का मौसम शुरू होते ही गाजर की तरह की पत्तियों वाली एक वनस्पति काफी तेजी से बढ़ने और फैलने लगती है। इसे गाजर घास, या चटक चांदनी आदि के नाम से जाना जाता है। गाजर घास को सभी के लिए गंभीर समस्या बताते हुए उन्होंने कहा कि यह पूरे वर्ष भर खाली स्थान एवं अनुपयोगी भूमि पर उगता और फलता फूलता रहता है। सस्य विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार यादव ने गाजर घास के प्रवेश से लेकर इसकी विकरालता और इससे कृषि, मानव और पशुधन पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि लगातार इस घास के संपर्क में आने से मनुष्यों में डर्मेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा जैसी अनेक गंभीर बीमारियां हो रही हैं। अखिल भारतीय खरपतवार अनुसंधान परियोजना हिसार केंद्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. टोडरमल पूनिया ने गाजर घास के निवारण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले रसायनों के बारे में जानकारी दी।